चतुर्थ अध्याय

'गिरिराज किशोर के नाटकों में सामाजिक समस्या'

चतुर्थ अध्याय

'गिरिराज किशोर के नाटकों में सामाजिक समस्या

नाटक सामाजिक जीवन की प्रतिलिपी है। मनुष्य के सामाजिक जीवन की जटिल-समस्याओं, उसकी कर्म-संकुलता से घिरी जिंदगी, अनसुलझी गुथियों और मनोभावों को रंगमंच पर प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। नाटक समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं का गहराई से अध्ययन करता है। आज भारतीय समाज विकट सामाजिक मोड़ से गुजर रहा है।

वस्तुतः वर्तमान युग समस्याओं का युग है। साहित्य समाज का प्रतिफलित है। वह मानव निर्मित होता है। मानव जिस समाज में रहता है। वहाँ विभिन्न प्रकार की समस्याएँ दिखाई देती हैं। मनुष्य जीवन का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहाँ आज समस्याओं का अस्तित्व नहीं। मनुष्य के जीवन में समस्याएँ निरंतर बढ़ती ही जा रही है। मानव की इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है। यही अतृप्ति जीवन में समस्याओं का जाल फैला देती है। वर्तमान युग में समस्याएँ जीवन में इतनी बढ़ गई है कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्या है।

समाज में स्थित हर एक समस्या पर साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई है। साहित्य में समस्याओं का वर्णन होना यह मानव मात्र की आवश्यकता है। वर्तमान युग में समस्या मनुष्य के जीवन में कठीण पहेली के सिवाय और कुछ नहीं है। जब तक मनुष्य है तब तक समस्याएँ रहेगी। गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में मनुष्य जीवन की ऐसी ही समस्याओं को चित्रित किया है। समस्या पुरे विश्व में व्याप्त है। आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जो किसी न किसी कठिन उलझन में कसमसाता न हो।

4.1 समस्या शब्द का अर्थ -

इस विशाल मानव समूह को 'समस्या' जैसे छोटे से शब्द ने बांध रखा है। इस छोटे से शब्द ने मानव को चिंतनीय बनाया। सोच विचार करने के लिए मजबूर किया। विविध कोशों में 'समस्या' शब्द का अर्थ निम्न प्रकार से दिया

है।

1. 'मानक हिंदी शब्दकोश' में समस्या का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''उलझन वाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या विकट प्रसंग।''[1]
2. 'राजस्थानी हिंदी शब्दकोश' में कहा है - ''उलझन भरी बात। जिसका निर्णय सहज में न हो सके, कठिन प्रश्न, विकट प्रसंग।''[2]
3. 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में समस्या के संदर्भ में लिखा है - 'वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग।''[3]
4. ''मानक अंग्रेजी हिंदी कोश' में इस शब्द का अर्थ है -'उलझन, कठिन प्रश्न, पहेली, दुर्बोध बात व्युह पहेलिका।''[4]
5. हिंदी शब्दसागर में 'समस्या' शब्द का अर्थ है - कठिन अवसर या प्रसंग।''[5]

4.2 समस्या शब्द की परिभाषा -

समस्या एक प्रक्रिया हैं, जिसमें द्वंद्वात्मक स्थिति होती है। परस्पर विरोधी स्थितियों में समस्या का उद्भव होता है। समस्या विषम स्थितियों को अपने में समेटकर वह एक गुत्थी के रूप में उपस्थित होती है। समस्या किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित न होकर समुह या समाज से भी संबंधित होती है। समस्या का दूसरा यह पहलू भी है कि कोई भी समस्या ऐसी नहीं हो सकती जिसका हल संभव न हो। समस्या के जन्म के साथ ही उसके हल कि परिस्थितियाँ भी जन्म लेती है।

जैनेंद्र जी जीवन के लिए द्वैतस्थिति अनिवार्य बताते हुए 'समस्या' को परिभाषित किया है, ''धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य

---

1. सं.रामचंद्र वर्मा - 'मानक हिंदी शब्दकोश',पृ.283
2. सं.बदरीप्रसाद साकरिया - 'राजस्थानी हिंदी शब्दकोश', पृ.1361
3. सं.श्री नवलजी - 'नालंदा विशाल शब्दसागर', पृ.1407
4. सं.सत्यप्रकाश - 'मानक अंग्रेजी हिंदी कोश', पृ.1071
5. सं.करूणापति त्रिपाठी - 'हिंदी शब्दसागर', पृ.975

जैसे जोड़ीदार शब्दों की स्थिति को जीवन से समाप्त कर दिया जाएगा तो जीवन का अर्थ भी समाप्त होने लग जाएगा। जीवन की ज्योति को, उसके वर्चस्व को बढ़ाना है तो इस अंतिम द्वैत के बोध की ओर आत्मा को तीव्रतर होने देना होगा। इस प्रकार द्वैत-वेदना में से उस शक्ति का उदय होगा, जिसमें से पराक्रम और पुरूषार्थ फलित होता है।''[6]

इसमें जैनेद्र ने समस्या के लिए द्वैत स्थिति को अनिवार्य बताया है। दोनो विरोधी स्थितियों का निर्माण हुए बग़ैर उनमें संघर्ष पैदा नहीं होता और संघर्ष से ही समस्या पैदा होती है। समस्या से ही जीवन को अर्थ प्राप्त होता है। संसार का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें समस्याएँ विद्यमान न हो। मानव जीवन और समस्या का रिश्ता सदा ही अभिन्न रह है। समस्या रहित जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। समस्या के बारे में इलाचंद्र जोशी का मत है कि -''आकाश के असीम विस्तार में टिमटिमातें तारों की तरह समस्याएँ भी अनगिनत और असंख्य है। मगर उसकी यात्रा का कोई अंत नहीं।''[7]

डॉ.वेंकटेशराव ने लिखा है,''चेतना के स्तर पर जब परिस्थितियाँ विषम होकर उलझ जाती है तो समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसकी स्थिति सहज होती है, जो मनुष्य को संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। संघर्षात्मक स्थिति की प्रक्रिया ही समस्या होती है।''[8]

4.3 समस्या का स्वरूप -

समस्या का स्वरूप व्यापक है। विभिन्न संदर्भों में व्यक्ति,प्रकृति और व्यवहार का अवलोकन करना आरंभ करता है तब उसके मन में रुचि-अरुचि के भाव और असंख्य जटिलताएँ उत्पन्न होती है। मनुष्य की इच्छा और इससे उत्पन्न समस्या के बारे में विमल भास्कर का मत हैं,''मनुष्य इच्छाओं का दास है

---

6. जैनेंद्रकुमार : लेख - शक्ति और नीति : प्रकाशित 'मन' अगस्त - पृ.75
7. इलाचन्द जोशी, लेख युग की समस्याएँ और साहित्यकार आलोचना-3, पृ.71 जनवरी-मार्च-1968
8. डॉ.सीलम वेंकटेश्वरराव - 'यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन', पृ.26

और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है। यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल-सा फैला देती है।''[9]

''मूल्य समाज की वह आधार शीला है जिस पर सभ्यता और संस्कृति का भव्य प्रसाद निर्मित होता है। लेकिन जब व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक मूल्य में कोई संतुलन नहीं रहता उस वक्त समस्या का निर्माण होता है।''[10] समस्या निर्माण द्‌वारा अपने जीवन को दुःख पूर्ण और त्रासद बनाने का दायित्व स्वयं मनुष्य का ही है। मनुष्य का जीवन हमेशा अभावों से घिरा रहता है। समस्याओं को जानने के लिए समग्र व्यापक दृष्टी की अवश्यक्ता है। समस्या एक जटिल प्रक्रिया है। एक समस्या दूसरी समस्या को जन्म देती है। एक समस्या द्‌वारा अनेक समस्याओं का उद्‌भव होता है। समस्या की कोई निश्चित क्षेत्र-सीमा नहीं आँकी जा सकती। प्राकृतिक समस्याओं से ज्यादा मानवनिर्मित समस्याओं के कारण मानव अधिक मात्रा में तनावग्रस्त रहता है। अर्थात सामाजिक समस्याओं का स्वरूप विशाल है।

जब कभी व्यक्ति में निजी स्वार्थ, अह्‌म की प्रवृति बढ़ जाती है तब प्रेम, सेवा, ममता, दया, सहानुभूति, त्याग, परोपकार आदि मूल्यों का अवमूल्यन करके व्यक्ति अपने अहंम के अस्तित्व को बनाए रखने में समस्याओं को जन्म देता है। समस्या सीधी सरल प्रक्रिया नहीं है। वह उलझनों से एंव गुथियों से युक्त होती है। समस्या मनुष्य के सामने चुनौती खड़ी करके उन्हें चिंतनशील बनाती है। मनुष्य को जीवन में प्रारंभ से आंत तक तथा सभी क्षेत्रों में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मनुष्य मख्खी की तरह समस्याओं के जाल में उलझता जाता है।

तात्पर्य यह है कि मानव की अपनी अनेक जरूरतें होती है, वे सारी आवश्यकताएँ सहजता से पूरी नहीं हो सकती। अपनी इच्छा की पुर्ति की कोशिश की जाती है और तब मानव जीवन में समस्याएँ उत्पन्न होती है। इससे स्पष्ट है कि मानव जीवन के प्रारंभ से समस्याएँ अभिन्न रही है।

---

९. डॉ.विमल भास्कर - 'हिंदी में समस्या साहित्य', पृ.10
10. डॉ.हेमेन्द्र पानेरी - 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में मूल्य-संक्रमण',पृ.2

'समस्या' एक शब्द नहीं बल्कि मानवीय प्रवृति है। मानवी जीवन में भावुकता, कार्यतत्परता, सफलता आदि के दर्शन होते है। सुख-दुःख से बना-बुना जीवन एक पहेली है। 'समस्या' मानवी जीवन को सक्रिय बनाने का साधन है, यदि समस्या नहीं हो तो मानवी चेतना निष्क्रिय रहेगी। हर एक जीव समस्या से पीड़ित होने के कारण उसे सुलझाने का प्रयास करता है। वही जीवन है। एक ही समस्या विविध रूपों में प्रकट होती है।

साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में मानवी जीवन से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक आदि विभिन्न रूपों में समस्या को चित्रित किया है। इस कारण मनोरंजन करनेवाला, ज्ञान देनेवाला साहित्य आज समस्या को चित्रित करके उसे सुलझाने का साधन भी बना है ऐसा लगता है।

4.4 सामाजिक समस्या -

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज से व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकाताएँ पूरी होती है। उन आवश्यकताओं को पूर्ण करने में जब सामाजिक संस्था असमर्थ हो जाती है, तब जो स्थिति उत्पन्न होती है उसे ही 'सामाजिक समस्या' कहा जाता है। राम आहुजा के मताअनुसार "सामाजिक समस्या शब्द का उसी विषय के लिए उपयोग किया जाता है, जिसे सामाजिक आचारशास्त्र और समाज प्रतिकुल समझता है।"[11]

समाज में हुए परिवर्तन और उसकी प्रक्रिया से निर्माण सामाजिक विघटन के परिणाम के कारण ही विविध सामाजिक समस्याएँ होती है। सामाजिक, नैतिक मूल्यों के विघटन के कारण भी सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है। मनुष्य का दृष्टिकोन समाज के प्रति कुछ परिवर्तित सा हो गया है। वर्तमान शिक्षा, अधिकार, स्वतंत्रता तथा बुद्‌धिवाद ने समाज में, व्यक्तियों में अनेक समस्याएँ पैदा हो रही है। समस्या समाज सापेक्ष होती है। समाज में उपस्थित विषम परिस्थितियाँ, शोषण की प्रक्रिया, अबाध गति से घटने वाली घटनाएँ, कुचक्र व्याप्त बुराइयाँ आदि सामाजिक समस्या के अंतर्गत आती है। हारटन और लेसले के अनुसार

---

11. राम आहुजा - 'सामाजिक समस्या', पृ.2

"सामाजिक समस्या वह स्थिति है, जो बहुत से लोगों को अनुचित रूप से प्रभावित करती है, और जिसके निराकरण के लिए सामुहिक कार्य की आवश्यकता होती है।"[12]

समाज में विषमताएँ, विसंगतियाँ, विडंबनाएँ और परस्पर विरोधाभास के कारण समस्याओं का उद्‌भव होता है। और आगे जाकर वे तीव्रतर बन जाती है। समस्या मनुष्य के जन्म से ही उसके जीवन के साथ-साथ चलती रहती है। ऐसी ही सामाजिक समस्याओं को गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों द्‌वारा समाज के समाने रखा है। उसमें पारिवारिक, दांपत्य, नारी, प्रेम, अवैध संबंध, आत्महत्या शोषण जैसी अनेक समस्याओं का चित्रण किया है।

4.4.1 पारिवारिक विघटन -

व्यक्ति संपूर्ण जीवन परिवार में रहकर नियमबद्‌ध रूप से व्यतित करता है। इसलिए समाज में परिवार एक मौलिक संस्था है। लेकिन आज परिवार का ढ़ाचा पारंपारिक नहीं है। आजकल परिवार का कार्य सीमित होता जा रहा है। पारिवारिक मूल्य भी परिवर्तित हो रहे है। परंपरागत प्रतिमाएँ टूट रही है।पारिवारिक विघटन बड़ी तीव्र गती से हो रहा है। पारिवारिक संबंधों में दरारें पडना, तनाव निर्माण होना, जटिलता, जबरदस्ती से संबंध को ढोने की विवशता का यथार्थ चित्रण आदि समस्याओं को आधुनिक नाटककारों ने सूक्ष्म रूप से चित्रित किया है। पारिवारिक संस्था के लिए परिवर्तित स्थितियाँ एक चुनौती के रूप में सामने आयी है। स्वार्थ, सुख और आपसी मतभेद, अस्तित्व की प्रबल भावना, नई पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी में वैचारिक भिन्नता आदि कारणों से पारिवारिक विघटन होता है।

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक में पारिवारिक जीवन के बिखराव का चित्रण हुआ है। इस नाटक में तारा अपने ही परिवार का वातावरण घुटनभरा बनाती है। इस नाटक के सभी पात्र पारिवारिक जीवन की कस्मकस से गुजरते है। न चाहते हुए भी पारिवारिक घुटन भरी जिंदगी जी रहे है। तारा के बारे में

12.डॉ.सुनंदा पालकर - 'समाजवादी उपन्यासकार भैरव प्रसाद गुप्त', पृ.262

अंकन का मत है,"माँ पहले हम सबमें कितनी रुचि लिया करती थी। अब हम अलग अलग खुँटियों से बँधे पनीर के पानी की तरह बुंद-बुंद कर-कर के टपक रहे है। पापा तो पुरी तरह रिस गए मालूम पडते है।"[13] अंकन के इस कथन से इस नाटक के पात्रों की मानसिक कुंठा का पता चलता है। साथ ही पारिवारिक घुटन और टूटन का भी चित्रण हुआ है।

'प्रजा ही रहने दो' इस महाभारतकालिन नाटक में एक ही परिवार के लोगों में सत्ता के लिए की गयी एक दूसरे की हत्य का चित्रण हुआ है। इस नाटक में परिवार के सभी सदस्यों ने प्यार से ज्यादा अधिकार को महत्व दिया। सत्ता और अधिकार के लालच में गांधारी और कुंती के पारिवारिक टूटन का चित्रण हुआ है।

'घास और घोड़ा' यह सामाजिक नाटक है। जिसमें विमला के अवैध प्रेम संबंधों का चित्रण हुआ है, जिसके कारण विमला का पारिवारिक जीवन तहस-नहस हो जाता है। विमला प्रधान के बेटे से अवैध्य प्रेम संबंध रखती है इस बात का शक विमला के पति को होता है। वह विमला से कहता है,"कहाँ है वह? बुलाओं.... मैं उससे साफ-साफ बात करूँगा वह मेरा घर क्यों बरबाद करना चाहता है।"[14]

विमला पति के कहने से प्रधान के बेटे को घर आकर मिलने को मना करती है। इसकारण गुस्से में प्रधान का बेटा विमला के पति का कत्ल करता है। पति पत्नी का संबंध प्यार और विश्वास पर टिका होता है। विमला अपने पति से प्यार और विश्वास नहीं रखती है, जिस कारण उसका परिवार टूट जाता है।

'केवल मेरा नाम लो' इस मनोवैज्ञानिक नाटक में रागिनी की मौत से रजनीकांत का परिवार टूट जाता है। रागिनी की मौत से सुलभा और रजनीकांत के मन पर बूरा असर पडता है। सुलभा अपनी माँ के तस्वीर के सामने कहती है, "माँ तुम्हें गए आज साढ़े तीन महीने हो गए। उस मकान को छोड़ते हुए सोचा था कि

---

13. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा', पृ.67
14. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा', पृ.69

शायद पापा उस घर, आस-पडौस और वातावरण को छोड देने पर कुछ सँभलेंगे। वहाँ तो आपकी स्मृति ही स्मृति थी। पापा उसी में डूबे रहते थे। यहाँ आकर तो पापा और भी अधिक परेशान रहने लगे.....।''[15] सुलभा, रजनीकांत और रागिनी का परिवार रागिनी की मौत के कारण बिखर जाता है।

गिरिराज किशोर के 'जुर्म आयद' इस नाटक में भी उम्मेदी के पारिवारिक बिखराव का चित्रण हुआ है। उम्मेदी बहुत से सपने सजाकर दुल्हन बनकर अपने पति के घर आती है,''कुछ ही दिनों में उसका निषेध-मुक्त और स्वतंत्र व्यवहार ससुरालवालों की आँखों में खटकने लगा। वह बदचलन करार दे दी गयी।''[16] पति ने भी घरवालों का साथ दिया और अपनी ही बेटी का बाप होने की सचाई को नकार दिया तब ससुरालवालों और पति से त्रस्त उम्मेदी परिवार से रिश्ता तोडकर मौत को गले लगाने जाती है। इस नाटक में उम्मेदी पर उसके परिवारवालों के जुल्म और अन्याय, अत्याचार का चित्रण हुआ है।

पति-पत्नी के बीच अनमेल, वैचारिक भिन्नता, प्रेम का अभाव, समन्वय की कमी, मानसिक स्वास्थ्य का अभाव होने के कारण परिवार टूट रहे है। पारिवारिक विघटन एक सामाजिक समस्या है। आज वैश्विकरण, नागरीकरण, नयी समाज व्यवस्था में इस समस्या ने भयावह रुप लिया है। इसकी ओर गिरिराज ने संकेत किया है।

4.4.2 दांपत्य जीवन की समस्या -

विवाह एक सामाजिक बंधन होने के साथ-साथ एक पवित्र संस्कार के रूप में माना जाता है। किंतु विवाह के बाद अनेक कारणों से दांपत्य जीवन, विषम, असंतुलित एवं कष्टदायक बन जाता है। विशिष्ट परिस्थिति अथवा विशिष्ट कक्षा के कारण पति या पत्नी दोनों अपने वैवाहिक जीवन में संतोष नहीं पाते। इस असंतोष की परिणति पति-पत्नी के बीच संघर्ष में होती है। पति-पत्नी में आपसी स्नेह ईर्षा में परिवर्तित हो जाता है। पति-पत्नी संबंध प्रायः सभी संबंधों का

15. गिरिराज किशोर - 'केवल मेरा नाम लो', पृ.250
16. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद', पृ.22

मूल स्त्रोत है। दांपत्य का विघटन वैयक्तिक विघटन तक सीमित नहीं होता इसका दुष्परिणाम समाज के स्वास्थ्य पर भी होता है।

पति-पत्नी के बीच विश्वास महत्वपूर्ण होता है। अगर इनमें विश्वास प्रेम, स्नेह, अपनापन न हो तो दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है। आधुनिक युग में दांपत्य जीवन में अधिक मात्रा में टकराव नजर आता है। दांपत्य जीवन में समझौता महत्त्वपूर्ण है। अगर समझौता दोनों में न हो तो दांपत्य-जीवन तनाव के घेरे में आ जाता है। दापंत्य जीवन की इस समस्याओं को गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में चित्रित किया हैं।

गिरिराज किशोर के 'नरमेध' नाटक में तारा की बिगड़ती मानसिकता के कारण पति-पत्नी में तनाव निर्माण होता है। तारा अपने पति इंद्रराव पर आरोप लगाती है, "शादी के दिन से ही ये नाराज है। इन्होंने मुझे कभी कुछ नहीं बताया मैंने इनसे कभी कुछ नहीं छिपाया।... नारी तु इन्हें समझा इतना जुल्म न करें। मेरी गलती हो तो मुझे मारें, पर खामोश न रहे। या दूसरी शादी करले।"[17] तारा अपने अहंम के कारण इंद्रराव पर आरोप लगाकर अपने ही दांपत्य जीवन में जहर घोल लेती है। तारा के मन में शक है की इंद्रराव किसी ओर से प्यार करते है। जब की इंद्रराव सिर्फ तारा को चाहते है। फिर भी तारा अपने पति पर शक करती है। पति-पत्नी के बीच शक, संदेह होने से दांपत्य जीवन में तनाव निर्माण होता है।

'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में धृतराष्ट्र गांधारी के दांपत्य जीवन में वैचारिक भिन्नता को स्पष्ट किया है तो इसी नाटक में द्रौपदी का अपने पाँच-पतियों के प्रति क्षोभ दिखाया है। द्रौपदी कुंती से कहती है, "एक ही पति होता तो स्थितियाँ इतनी न उलझती। पाँच-पाँच पतियों द्वारा रक्षित पत्नी को अन्ततः अपनी रक्षा स्वयं ही करनी पडती है। अपनी नियति को तो मैं उसी समय ताड गई थी जब वरमाला एक को पहनाई थी और आपने रोटी के टूकडे की भाँति मुझे पाँचों में बाँट दिया था।"[18] द्रौपदी अपने पाँच पतियों के होते हुए भी अपमानित होती है, तब वह अपने पाँच पति होने पर दुःख व्यक्त करती है।

---

17. गिरिराज किशोर - 'नरमेध', पृ.53

18. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो', पृ.102

'घास और घोड़ा' इस नाटक में विमला पति के होते हुए प्रधान के बेटे से अवैध संबंध रखती है। पति और भाई के समझाने पर वह प्रधान के बेटे को मिलने के लिए मना करतां है। वह कहती है,"मुझे लगता है; न मैं तुम्हारे साथ औरत रह पाती हुँ न उनके साथ। उनके दांत गंदे है, तुम्हारे उजले; पर औरत तो उन्हीं की हुँ।"[19] विमला अपने पति के साथ खुश नहीं है इसी कारण गैरमर्द से संबंध रखती है। पति प्रेम से असंतुष्ट विमला का चित्रण किया है। प्रधान का बेटा गुस्से में विमला के पति की हत्या कर देता है। जिस कारण विमला का दांपत्य जीवन समाप्त हो जाता है।

'जुर्म आयद' इस सामाजिक नाटक में उम्मेदी के दांपत्य जीवन की त्रासदी का चित्रण किया है। उम्मेदी बहूत से सपने लेकर पति के घर आती है। लेकिन ससुरालवाले उसके साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते पति भी घरवालों का साथ देता है। उम्मेदी को बेटी होने पर "पति ने बच्ची का बाप होने की सच्चाई तक को नकार दिया।"[20] पति के अन्याय अत्याचार के कारण उम्मेदी आत्महत्या करने की सोचती है। उसके दांपत्य जीवन में दरार पडती है।

इस नाटक में आशा का पति पत्नी को अत्यंत हीन मानता है। अपने फायदे के लिए अपनी ही बीवी को सेक्रेटरी साहब के पास भेजना चाहता है। आशा इसका विरोध करती है तो वह आशा से कहता है, बीवी की जगह पति के चरणों में होती है। जिधर उसके चरण चल पडे, उधर ही पत्नी का शीश झुकना चाहिए।"[21] आशा का पति आशा के मना करने पर उसे पिटता है। पति के अत्याचार के कारण आशा आत्महत्या कर अपना दांपत्य जीवन समाप्त कर देती है।

इस प्रकार गिरिराज ने वर्तमान में जो दांपत्य जीवन में घटनाएँ घटीत होती है उन्हें अपने नाटकों में चित्रित किया है। दांपत्य जीवन कि महत्वपूर्ण समस्या को उजागर किया है। 'जुर्म आयद' में अपने फायदे के लिए अपनी पत्नी को

---

19. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा', पृ.64
20. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद',पृ.22
21. वही,पृ.35-36

अफसर के पास भेजने की बढ रही हीन प्रवृति पर करारा व्यंग्य किया है। सामाजिक नैतिक मुल्य ध्वस्त हो रहे है। जो दुसरी ओर अपने ही संतान को नकारनेवाले बाप का चित्रण करते हुए बदलती पुरूषी मानसिकता को उजागर किया है। गिरिराज ने दांपत्य जीवन की विविध पहलू को खुबी से चित्रित किया है।

4.4.3 नारी शोषण की समस्या -

पुरुष एवं नारी समाज के आवश्यक अंग है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति हीन और दयनीय रही है। आज भी भारतीय नारी पुरुष से अपमानित, तिरस्कृत और लांछित है। पुरुष ने अनेक बंधनों में बाँधकर नारी का शोषण किया है। आज तक नारी को बिस्तर की शोभा और अपनी इच्छा की कठपुतली समझा है। पुरुष की दृष्टि से न तो नारी के गौरव का कोई अर्थ है और न उसके समर्पण का नारी के साथ हमेशा ही छल होता आया है। उसके अरमानों का गला घोंट दिया गया है। डॉ.अर्जुन धरत का मत है, "सेवा और त्याग की मूर्ति नारी को भारतीय पुरूष प्रधान समाज द्वारा शोषित, पीड़ित, अशिक्षित, हीन वृति का शिकार होना पडा।"[22] नारी चाहे पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ प्रत्येक स्थिति में हर क्षेत्र में उसका शोषण किया जाता है।

गिरिराज किशोर ने 'प्रजा ही रहने दो' नाटक में नारी की हीन-दीनता को अंकित ही नहीं किया बल्कि उसकी करूण त्रासदी को भी आलोकित किया है। कौरव-पांडव जुआ खेलते है, किंतु दांव पर चढाया जाता है द्रौपदी को, मानो वह कोई वस्तु या यंत्र हो। द्रौपदी के मन की भावना का विचार किये बिना उसे भरी सभा में अपमानित किया जाता है। नारी का न कोई स्वतंत्र अस्तित्व है न व्यक्तित्व। वह केवल पुरूष की वासनापूर्ति का साधन है। इसी दृष्टी से नारी की तरफ देखा जाता है। जुआ खेलते समय शकुनी पांडवों से माँगता है "बस एक हजार ऐसी दासियाँ जिन्होंने अभी तक गर्भ धारण नहीं किया। उनकी तो नियति ही है गर्भ धारण करना। वहाँ नहीं किया तो यहाँ करेगी।"[23] शकुनी की प्रस्तुत माँग

---

22. डॉ.अर्जुन धरत - 'नागार्जुन के नारी पात्र', पृ.68
23. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो', पृ.37

में नारी जीवन की करुण विडंबना निहित है।

'घास और घोड़ा' इस नाटक में विमला के पति का कत्ल होने के बाद दरोगा विमला को गलत बयान देने के लिए कहता है। वह विमला से कहता है, "देखों बीबी, अपना आगा-पीछा सोच लो उसे जाना था सो चला गया तुम्हारी पूरी जिंदगी पडी है। प्रधान का बेटा भला हो या बुरा, अब जिंदगी उसी के सहारे कहानी है। रपट में लिखा ही बोलना।"[24] यहाँ दरोगा विमला को जबरदस्ती रपट में लिखी बात कहने को कहता है। विमला की असहायता का फायदा उठाकर उस पर अधिकार जमाकर उसका शोषण किया जाता है। विमला को गलत बयान देने के लिए मजबूर किया जाता है।

'केवल मेरा नाम लो' नाटक में सुलभा का मानसिक दृष्टि से शोषण होता है। सुलभा के पिता रजनीकांत उसके साथ अपनी बेटी की तरह व्यवहार नहीं करते। सुलभा का डॉक्टर के सामने अपमान करते है। सुलभा को बताते है कि 'डॉक्टर की नजर तुम्हारी तरफ से ठीक नहीं है। तब सुलभा को लगता है कि 'मम्मी न गई होती तो किसी की नजर न बदली होती।"[25] सुलभा अंदर ही अंदर घुट-घुट के जीती है। वह अपना दुःख, दर्द किसी से नहीं कह पाती। रजनीकांत पिता होते हुए भी कामुक पिता बनकर अपनी हवस की पूर्ति बेटी के द्वारा करना चाहते है। पशु से भी हीन बना मानव का यह रूप सोचने के लिए विवश करता है कि क्या मानव इतनी घिनौनी हरकतें करता है ? नारी शोषण का यह रुप भयावह है - लगता है ऐसी हालत में नारी का रक्षक कौन?

'जुर्म आयद' इस नाटक में उम्मेदी की करुण कहानी को चित्रित किया है। उम्मेदी की करुण कहानी को चित्रित किया है। उम्मेदी को जब पुलिस थाने में लाया जाता है तब दरोगा और चीफ उसकी तरफ बुरी नजर से देखते है। उसे बयान लेने के लिए बुलाते वक्त दरोगा कहता है, "आती है कि नहीं? साले बन गए चीफ एक औरतिया हिलाए नहीं हिलती नहीं हिलती हम चीफ थे तो क्या मजाल

---

24. गिरिराज किशोर - 'घास और घोडा',पृ.93
25. गिरिराज किशोर - 'केवल मेरा नाम लो', पृ.272

औरत हमारी आँखों के सामने आए और जिस्म पर लिबास बना रहे।"[26] दरोगा का यह कथन उसके कमिनेपन का प्रमाण है। दरोगा बयान लेने के बहाने पास आकर लिपटने की कोशिश करता है। गरीब, असहारा, मजबूर औरत को देखकर दरोगा और चीफ अत्याचार करते है। उसका शोषण करते है।

इस प्रकार गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में नारी की स्थिति को दर्शाया है। वर्तमान युग में समाज कितना भी आधुनिकता और विज्ञान एवं प्रगती की बात करे फिर भी नारी के प्रति देखने का नजरीया नहीं बदला। आज भी उसे हीन दृष्टी से देखा जाता है। उसका शोषण किया जाता है। जब तक नारी स्वयंम सशक्त नहीं होगी तब तक यह होता रहेगा, नारी को अपनी खुद की रक्षा करनी चाहिए।

4.4.4 अवैध यौन संबंध की समस्या -

नारी की यौन संबंध की समस्या को भी चित्रित किया गया है। समाज में रहते समय उसका पुरुष से कई रुपों में संबंध आता है। तब वे एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते है। अपनी शारीरिक भूख मिटाने हेतु वे एक दूसरे के और करीब आते है। किंतु इस आकर्षण में सामाजिक मान्यताओं का उलंघन होता है। तब वह अवैध यौन संबंध की समस्या बन जाती है। काम मानवीय जीवन की सहज प्रवृति है। स्त्री-पुरुष में ये भावना कम अधिक मात्रा में होती ही है। दिन-ब-दिन यह समस्या सामाजिक नैतिकता को विघटीत कर रही है। नाटककार ने इसपर भी प्रकाश डाला है।

गिरिराज किशोर के 'घास और घोडा' नाटक में पंडित हजारीलाल की बेटी अपने कुलमर्यादा और पिता की प्रतिष्ठा का विचार न करते जाट ड्राइवर से अवैध संबंध रखती है। जिसके कारण पंड़ित हजारीलाल को कही मुँह दिखाने को जगह नहीं। बेटी के अवैध संबंधों के कारण वे अपनी बेटी के कर्मो पर कोसते है।

इस नाटक की नायिका विमला शादीशुदा होकर भी प्रधान के बेटे

---

26. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद', पृ.13

के साथ अवैध यौन संबंध रखती है। प्रधान का बेटा विमला से कहता है, "तुम्हारे बिना मैं रह नहीं सकता।"[27] किंतु विमला पति और प्रेमी के द्वंद्व में फँसी है। विमला उसे बताती है कि मैं औरत तो उन्हीं की हूँ। तो प्रधान का बेटा कहता है, "मेरे सिवाय तुम किसी की नहीं हो सकती। किसमें हिम्मत है, तुम्हें छू सके।"[28] विमला अपने पति के होते हुए प्रधान के बेटे के साथ यौन संबंध रखती है। उसे अपने पति के दांत गंदे लगते है और प्रेमी के उजले। विमला भी मन से प्रधान के बेटे के बिना रहना नहीं चाहती।

गिरिराज किशोर ने इस नाटक से यौन संबंधों से पीडित नारी का चित्रण किया है। समाज में ऐसी अनेक नारियाँ है जो पति के साथ खुश नहीं रहती तब वह गलत रास्ता अपनाती है। अवैध संबंध स्थापित करती है। अवैध यौन संबंधों में जात उम्र, प्रतिष्ठा को नहीं देखा गया, परंतु सिर्फ स्वार्थ तक ही सोचा है। कभी कभी इससे होनेवाले विवाह सामाजिक चुनौती बनते है, इस पर भी गिरिराज किशोर ने प्रकाश डाला है। बदलते सामाजिक संदर्भ, समाज मान्यता, नई समाज व्यवस्था में इस पर सोचना आवश्यक है। आज के साहित्य में इसपर प्रकाश डालकर साहित्यकारों ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता निभायी है।

4.4.5 प्रेम की समस्या -

दो व्यक्तियों में प्रेम एक ऐसी संवेदनीय, भावुक मनोवृति है जो दोनों के आकर्षण का कारण होती है। प्रेम ही वह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जिसके आधार पर यह संसार स्थिर है। प्रेम के कारण व्यक्ति एक दूसरे के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी रहता है। प्रेम के अभाव में व्यक्ति की आत्मा कुंठित होती है। प्रेम मानव मन की कोमलतम भावना है। आज के जमाने में प्रेम एक समस्या के रूप में हमारे सामने आयी है। गिरिराज ने असफल प्रेम का चित्रण अपने नाटकों द्वारा किया हैं। प्रेम की असफलता का व्यक्ति के मन पर इतना बुरा असर पडता है कि व्यक्ति पागल बन जाता है। उसकी जिंदगी निराशा से भर जाती है। 'नरमेध' में प्रेम के चित्रण को मानसिक कुंठा के रुप में चित्रित किया है।

27. गिरिराज किशोर - 'घास और घोडा', पृ.36
28. वही, पृ.64

'नरमेध' नाटक में तारा शादी से पहले नरेन से प्यार करती थी। अपने अंह के कारण वह नरेन से शादी नहीं कर पाती, लेकिन शादी के बाद अपने पूर्व प्रेमी नरेन के साथ बिताये सुखमय क्षणों की स्मृति संजोये रहती है। तारा शरीर से नरेन से दूर हो गयी, पर मन से अलग नहीं हो पाती। इसी कारण वह शादी के बाद भी उसकी याद में घुट-घुट कर जीती है। तारा के बेटे रंजन और वंदु नरेन की बेटी वंती से प्यार करते है पर तारा को लगता है, "वंती की शक्ल नरेन जैसी ही है। उसी तरह हँसती है, मजाक करती है। उसी तरह आँसू भर लेती है।"[29] इस कारण तारा वंती को अपनी बहू बनाने का विरोध करती है। वह अपना मानसिक संतुलन खो देती है। उसे लगता है, "क्या मेरी पीढियाँ नरेन की पीढियों की पीढी-दर-पीढी इसी तरह प्यार कर-करके टूटती रहेंगी ?"[30] इसके लिए वह अपने आपको दोषी मानती है। प्यार से दूर होकर भी वह दूर नहीं हो पाती। इस नाटक में तारा की सहेली नीरा भी असफल प्रेमिका है। वह भी नरेन से प्यार करती थी। लेकिन उसे पा न सकी।

वंती चंचल प्रेमिका के रुप में सामने आती है। वंती सबसे पहले रंजन से प्यार करती थी फिर वंदु से और दोनों को छोड़ शादी के बाद अपने पति से प्यार करेंगी। वह स्वतंत्र विचारवाली लडकी है। अपने प्यार के बारे में अपने माँ-बाप और इंद्राव को बताती है। वह अपने विचार खुलेआम सबके सामने बताती है, "आपके जमाने में ज्यादा-से-ज्यादा दो से प्रेम किया जा सकता था। हम लोग उससे आगे निकल गए है। तीन तक तो आसानी से मुंड लेते है। चार-पाँच की बात हो तो भी हिम्मत नहीं हारते उम्र की भी कोई लिमिट नहीं। पचास-पचपन तक छूट है। वह कई एंगिल से प्यार रमता है।"[31]

इस प्रकार वंती अपने विचारों से चंचलता को प्रदर्शित करती है। वह भी अपना प्यार नहीं पा सकी। इस कारण मन से दुःखी होकर भी खुश रहती है। वंती के इस स्वभाव के कारण तारा उसे 'द्रौपदी' संबोधित करती है। इस नाटक

---

29. गिरिराज किशोर - 'नरमेध',पृ58
30. वही,पृ58
31. वही,पृ.48

के सभी पात्र प्यार करते है पर पाते नहीं। इन हालात में अंकन तो प्यार से नफरत करने लगता है। इसमें वंदू, रंजन, वंती, तारा, नीरा सभी असफल प्रेमी है। इस नाटक में प्यार की समस्या को मार्मिकता से स्पष्ट किया है। आज संसार में सबसे बडा अस्त्र-शस्त्र प्रेम ही है। कबीर जैसे महान समाज सुधारकों ने प्रेम की महिमा गायी है। अतः आज के साहित्य में 'प्रेम'महत्त्वपूर्ण विषय बना है।

4.4.6 आत्महत्या की समस्या -

आत्महत्या का अर्थ आत्म+हत्या, खुद की जिंदगी समाप्त करना, खुदकुशी करना आदि। कमजोर मानसिकता का यह प्रतीक मृत्यु समय के अनुसार नहीं आती बल्कि अपने मन से लायी जाती है। आज की दुनिया में आत्महत्या के प्रमाण बढ़ रहे हैं। वर्तमान जीवन में अनेक समस्याओं के साथ आत्महत्या की समस्या भी महत्त्वपूर्ण है। पुरुष की तुलना में नारी की आत्महत्या की संख्या ज्यादा है। आत्महत्या के कारण अनेक है। जैसे पति द्वारा शोषण, समाज से शोषण, पारिवारिक शोषण, प्रेम में असफलता, बलात्कार, दहेज प्रथा, अवैध संबंध आदि कारणों से स्त्री अपने जीवन का अंत कर लेती है। समाज में नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। नारी कितनी भी पढ़ी-लिखी या होशियार हो लेकिन फिर भी संकटों के समय वह घबरा जाती है। उसे कोई हल नहीं सुझता, तब वह मजबुरन अपने आपको मौत के हवाले करती है। गिरिराज ने अपने 'नरमेध' और 'जुर्म आयद' इन नाटकों में नारी के आत्महत्या की समस्या को उजागर किया है। 'नरमेध' में प्रेम की असफलता के कारण मानसिक संतुलन खोई तारा और 'जुर्म आयद' में पति, परिवार और पुलिस दरोगा से शोषित, पीडित बलात्कारित उम्मेदी की आत्महत्या को चित्रित किया गया है।

'नरमेध' की तारा विवाह से पहले नरेन से प्रेम करती थी। अपनी जिद्द और अहंम के कारण वह नरेन से शादी नहीं कर पाती। लेकिन शादी के बाद भी नरेन की याद में तडपती रहती है। पति और प्रेमी के द्वंद्व में फसी तारा के मन पर इसका गहरा असर होता है। वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती है। एक दिन सुबह वह नदी के अंदर जाते जाते नदी के बिचोबिच रेत में धस्स जाती है।

आत्महत्या के इरादे से गयी तारा को लोग बचा लेते है। घर वापस आने पर भी वह अच्छा बर्ताव नहीं करती घर का नौकर रज्जब अंकन को बताता है,"मेम साहब गैस का सिलिण्डर खोले और हाथ में जली हुई दियासलाई लिए मुँह और नाक से गैस सुडक रही है।"[32] इस तरह तारा मानसिक संतुलन खोकर अपनी जान देने की बार-बार कोशिश करती रहती है। इसका कारण प्रेम में असफलता ही है।

'जुर्म आयद' में उम्मेदी अपने पति और परिवार वालों से त्रस्त होकर आत्महत्या करने जाती है। शादी के बाद कुछ ही दिनों में उम्मेदी का निषेध मुक्त और स्वतंत्र व्यवहार घरवालों की आँखों में घटकने लगता है। उसे बेटी होने पर पति ने बच्ची का बाप होने की सच्चाई तक को नकार दिया है।

उम्मेदी खुद सहती रही लेकिन बच्ची पर मुसीबतें आयी तो वह सह न सकी। कौन जाने आगे चलकर इस बेगुनाह बच्ची के साथ क्या सलूक हो। ऐसा सोचकर अपनी ममता का गला घोटकर अपने दिल पर पत्थर रखकर अपनी एक साल की इकलौती बेटी को गोद में लेकर नदी में कुद जाती है। बच्ची डूब जाती है। उम्मेदी को बचाया जाता है। लेकिन बचने के बाद उसे हर रोज एक मौत से मरना पडता है। पुलिस थाने में चीफ और दरोगा उस पर अत्याचार करते है। आठ साल उस पर बलात्कार करते है। इस परेशानी में वह एक दिन जेल में ही आत्महत्या कर लेती है। एक मौत से बचने के बाद दूसरी मौत की शिकार होती है।

इसी नाटक की आशा भी अपने पति के अत्याचारों से परेशान है। उसका पति उसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। वह कहता है, "सेक्रेटरी साहब की पार्टी में मेरे साथ आना। उन्होंने खास तौर से तुम्हें लाने के लिए कहाँ है। वे तुम्हें पसंद करते है।"[33] अपनी ही पत्नी को गैर मर्द के पास भेजनेवाला आशा का पति पत्नी को सिर्फ उपयोग की चीज समझता है। अपने लाइसेंस के लिए आशा को सेक्रेटरी साहब के पास भेजना चाहता है। आशा ने मना करने पर उसे धक्का देकर गिरा देता है, लातों से पिटाई करता है। पति के अत्याचार

32.गिरिराज किशोर - 'नरमेध',पृ.45
33. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद', पृ.35

से पीडित आशा आत्महत्या कर लेती है।

इस प्रकार नारी का जीवन इतना दुःख पूर्ण है कि दूसरों के कारण उसे अपनी जान तक गवानी पडती है। सब मुस्किलों का सामना करते-करते वह अपने प्राण त्याग देती है। आत्महत्या एक शोचनीय समस्या है। जो वर्तमान में हर रोज घटित होती है। कोई-न-कोई नारी किसी-न-किसी मुस्किल के कारण आत्महत्या कर जान देती है।

आत्महत्या करके नारी समस्या से मुक्त होना चाहती है,परंतु सच्चाई यह है कि नारी इससे कहाँ तक मुक्त हो सकती है। आत्महत्या करना यह अंतिम रास्ता नहीं है। इस पर आज ढंग से सोचना होगा। नारी को आत्मनिर्भर बनकर कार्य करना होगा आज के युग में सिर्फ नारी ही आत्महत्या नहीं कर रही है बल्कि पुरुष भी इस समस्या से पीड़ित है। अतः इस सामाजिक समस्या पर यथार्थ रुप से प्रकाश डाला है।

4.4.7 आम आदमी के शोषण की समस्या -

वर्तमान युग में आम आदमी का शोषण बडी मात्रा में हो रहा है। यह शोषण सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक किसी भी स्तर पर में होता है। आम आदमी को हीन माना जाता है। उसे घृणा की नजर से देखा जाता है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में वर्ग व्यवस्था चली आ रही है। उसमें उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग ये तीन वर्ग है। निम्न वर्ग याने आम जनता जिस पर कोई भी अन्याय, अत्याचार करता है। उसे अपने अधिकार से वंचित रखा जाता है। अपनी मेहनत का फल तक नहीं दिया जाता। गिरिराज ने 'प्रजा ही रहने दो' और 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' इन नाटकों में आम आदमी के शोषण की समस्या का चित्रण किया है।

'प्रजा ही रहने दो' में प्रजा के वक्तव्य से प्रजा की पीडा सामने आती है। प्रजा समान्य है उसका अस्तित्व गौण है। उसका नित्य शोषण, दमन होता है। उस पर अन्याय होता है। प्रजा किसी भी बातपर विश्वास करती है। प्रजा की भावनाओं, गतिविधियों और क्रियाकलापों का कोई महत्व नहीं होता। वह

रात-रात भर जागते है। कोई आता है तो खडे हो जाते है। उसका कोई मूल्य नहीं है। प्रजा की व्यथा यह है कि किसी को प्रणाम करे तो भी उसका उत्तर नहीं मिलता। राजा अपनी सत्ता पाने के लिए युद्‌ध करते है, लेकिन आम जनता को, सैनिक को जान गवानी पडती है। अपनी दुरावस्था के बारे में सैनिक कहता है, ''हम कहीं नहीं ..... अतीत में न भविष्य में।''[34]

गिरिराज किशोर का 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे' में आम आदमी के शोषण के चित्रण में महान चेहरा कहता है, ''मुझे उन लोगों पर भी गर्व है... वे सच्चे भोलेभाले और निष्ठावान प्रजा है। पिसते-पिसते उनकी आँखों में अन्धे कुएँ खुद गए है। खुद क्या गए है, अत्याचारों ने खोद दिए है। वे उन्हीं कुओं में लटके अपना दम तोड रहे है।''[35] महान चेहरे के इस वाक्य से आम आदमी के दुःखी जीवन का परिचय होता है।

4.5 राजनीतिक समस्या -

देश में राजनेताओं ने व्यक्तिगत हित के सामने समाज हित और देश-हित को तिलांजलि दे दी है। राजनीतिक नेताओं में सदाचार सहयोग, सद्‌भाव, विश्वबंधुत्व जैसी कोई बात नहीं रही बल्कि अनीति, अनाचार, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी उनके प्रधान तत्त्व बने है। ये नेता सत्ता हासिल करने के लिए जनता के सामने झूठे नारे लगाते है लेकिन सत्ता हस्तगत करने के बाद कुछ नहीं करते सिर्फ खुद का स्वार्थ देखते है। बात तो करते है 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की पर इस पर अमल नहीं करते सबका हित और सुख देखने से पहले वे खुद का हित और सुख देखते है। आज के साहित्य में इस समस्या का बहुआयामी रूप दिखाई देता है।

4.4.8 सत्ता की समस्या -

राजनीति हमारे जीवन में इतनी घुलमिल गयी है कि उसके अतिरेक से न समाज बच सका है, न लेखक और न लेखन। पद प्राप्त करने के लिए सारे

---

34. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो', पृ.131
35. गिरिराज किशोर - 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे', पृ.202

मूल्यों और नैतिकताओं को ताक पर धर दिया गया है। सत्ता पाने के लिए देश में दंगे-फसाद, अन्याय-अत्याचार, खुन खराबा आदि किए जाते है। सत्ता पाने की लालसा इतनी बुरी है कि वह देश को विनाश की ओर ले जा रही है। सत्ता को पाने के लिए मनुष्य अपने नैतिकता, रिश्तें कर्तव्यभावना, जिम्मेदारी को भुलकर सत्ता के पीछे लग जाते है। भारतीय समाज में आया हुआ सबसे बडा परिवर्तन कुर्सी के प्रति मोह है। सत्ता की समस्या गंभीर बन गयी है।

'प्रजा ही रहने दो' में धृतराष्ट्र अंधा है फिर भी सत्ता को पाना चाहता है। वह केवल अपने जीवन काल तक ही नहीं बल्कि उसके पश्चात भी अपने पुत्रों के हाथ सत्ता की बागडोर देखना चाहता है। वह अपनी सत्ता के अधिकार का विस्तार करना चाहता है। उसकी इस मनोवृति को उद्घाटित करते हुए नागरिक कहते है "राजा को तभी कष्ट होता है जब उनका राज्य छोटा पडे।"[36] यही अमिट सत्तापिपासा उसे अमानवीय, खुँखार, हिंस्त्र तथा विवेकहीन बनाती है।

गिरिराज के राजनैतिक नाटक 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' में भी सत्ता के प्रती मोह दिखाई देता है। इस नाटक के दो नंबर के पात्र का मत है, "बड़ों ने कहा है हर स्त्री और हर कुर्सी शक्तिशाली की होती है।"[37] लोग कुर्सी के लालच में अपने आपको बड़ा बनाने के पीछे लग जाते है। सत्ता पाने के लिए एक दूसरे से लडते, झगडते है सत्ता प्राप्त करते है।

4.4.9 भ्रष्टाचार की समस्या -

भ्रष्टाचार का सीधा सरल अर्थ है भ्रष्ट आचार अर्थात व्यक्ति का ऐसा व्यवहार जो सामाजिक मूल्य, नियम तोडकर स्वयं का 'स्वार्थ' पूरा करने हेतु किया जाता है। भ्रष्टाचार आर्थिक समस्या की महत्वपूर्ण कडी है। सरकारी दफ्तर, पुलिस थाना, शिक्षाक्षेत्र आदि जगह गैरकारोबार चलते रहते है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ भ्रष्टाचार नहीं है। भ्रष्टाचारी लोगों की संख्या बढ़ती ही

36. गिरिराज किशोर - 'प्रजा ही रहने दो', पृ.5
37. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा', पृ.208

जा रही है। भ्रष्टाचार को बढावा भौतिकवादी दृष्टी के अतिरेक के कारण मिल रहा है। व्यक्ति के स्वार्थ परकता के साथ-साथ भ्रष्टाचार भी बढ़ रहा है। वर्तमान युग में भ्रष्टाचार की समस्या व्यापक एवं विकराल हो रही है।

भ्रष्टाचार का निर्माण धार्मिकता, सांप्रदायिकता का परिणाम नहीं बल्कि वर्तमान व्यवस्था का नतिजा है। चमनलाल गुप्ता का कथन है ''प्रजातंत्र में भ्रष्टाचार बढता जा रहा है। भ्रष्टाचार का अर्थ अपने पद अथवा शक्ति के दबाव में अनुचित काम करवाना, सत्ता एवं सामर्थ्य का दुरूपयोग करवाना है।''[38] भ्रष्टाचारी अधिकारियों के कारण देश का विकास नहीं होता इस ओर संकेत करते हुए डॉ.जाधव कहते है ''जिस समाज में भ्रष्टाचारी अधिकारी होते है, वह समाज कभी निर्भय नहीं होता, नौकरों में रिश्वत की प्रवृति बढती है।''[39] यह कथन यहाँ यथार्थ लगता है आज विधि, पुलिस, व्यवस्था में इसके दर्शन होते है।

'घास और घोडा' इस नाटक में दरोगा की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार को उजागर किया है। इस नाटक में विमला के पति का खुन प्रधान का बेटा करता है। तब प्रधान अपने बेटे को बचाने की प्रार्थना करता है। उस वक्त दरोगा कहता है, ''प्रधान जी, मुझे तो दो-दो काम एक साथ करने पडेंगे। आपके कातिल बेटे को बचाना और उस बेगुनाह को फाँसी पर चढवाना.... दो काम दो ही मिलकर कर सकते है। मैं और वह...।''[40]

प्रधान जेब की तरफ इशारा करता है। प्रधान जेब में से धीरे-धीरे सब पैसे निकालकर दरोगा के सामने रखता है। दरोगा सब पैसे उठाकर अपनी जेब भर लेता है। और प्रधान के बेटे को छोड़ने को झुठी रिपोट लिख लेता है। यहाँ भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था का पता चलता है।

'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में रजनीकांत को बंगला और

---

38. चमनलाल गुप्ता - 'यशपाल के उपन्यास-सामाजिक कथ्य' पृ.118
39. डॉ बलवंत साधू जाधव - प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना, पृ.164
40. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा', पृ.76

रुपये देकर अपनी फाईल का काम निकालने की कोशिश मिस्टर और मिसेज चामडिया करते है। भावनात्मक दृष्टी से मजबूर करके भ्रष्ट व्यवहार कराने की कोशिश करते है।

सामाजिक नाटक 'जुर्म आयद' में आशा अपने पति के कारण आत्महत्या करती है तब डॉक्टर आशा को देखकर 'इट इज ए नेचुरल डेथ' कहकर बताते है, "मैं सर्टीफिकेट दूँगा... देखता हुँ मेरे सर्टीफिकेट को कौन चेलेंज करेंगा।"[41] इस उदाहरण से डॉक्टर की भ्रष्टता स्पष्ट होती है। जो आत्महत्या के केस को नेचुरल डेथ कहकर झूठा सर्टीफिकेट देने को तैयार होते है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पुलिस, डॉक्टर, ऑफिस ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा जहाँ भ्रष्टाचार न हो। भ्रष्टाचार आम आदमी नहीं करता पर वह उसका शिकार बनता है। गलत कार्यों को बढावा देनेवाला भ्रष्टाचार आज सर्वत्र हो रहा है।

4.5.3 सदोष विधि व्यवस्था -

वर्तमान समय में विधि-विभाग की स्थिति अत्याधिक शोचनीय है। इस विभाग में नैतिक मुल्यों का विघटन हो रहा है। विधि-व्यवस्था में दूध का दूध और पानी का पानी करने की क्षमता होनी चाहिए, पर प्रत्यक्ष में मुकदमा न्यायालय तक पहुँचने के पूर्व उसमें इतना गोलमाल किया जाता है कि न्याय की अपेक्षा अन्याय होने की संभावना रहती है। हमारी न्याय-व्यवस्था अनुमानपर नहीं बल्कि प्रमाण पर चलती है। इसमें भी झूठे प्रमाण इकठठें करनेवाले और झूठी गवाही देनेवाले लोगों की कमी नहीं है।

इस समस्त प्रक्रिया में न्याय व्यवस्था भ्रष्ट हो जाती है। धन और शक्ति के बलपर न्याय देवता को नीलाम कर अपराधी सीनाताने घुमते है। बेकसुर को फाँसी होती है। इस संबंध में शशि जेकब का कथन देखिए, "आज न्याय प्राप्त करना टेढी खीर है। न्याय के लिए अनेक जटिल प्रक्रियाओं को पार करना पडता

41.गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद',पृ.39

है। अनेक पडावों पर रुकती-रेंगती आज की न्याय-प्रणाली यथार्थ में खोखली है।''[42] विधि व्यवस्था और राजनीतिक संबंध होने से उसकी विश्वसनीयता खतरे में पडी है।

गिरिराज किशोर के 'घास और घोड़ा' इस नाटक में विमला के पति का कत्ल प्रधान का बेटा करता है, और इसका इल्जाम विमला के भाई पर लगाता है। प्रधान अपने बेटे को बचाने हेतु दरोगा को रिश्वत देता है। दरोगा प्रधान की झूठी रिपोर्ट लिख लेता है और प्रधान को झूठे गवाह तैयार करने के लिए कहता है। साथ ही सलाह देता है कि रिपोर्ट विमला की तरफ से लिखने की ताकी विमला इसमें फंस जाए। प्रधान झूठी गवाही देता है। प्रधान का बेटा भी झूठी गवाही में कहता है कि -''यह अक्सर हमारे गाँव में आकर अपने जीजा को तंग करता था। उससे रूपये माँगता था।''[43] प्रधान का बेटा विमला के भाई पर पैसे के लिए जीजा का कत्ल करने का झुठा इल्जाम लगाता है। विमला के बेकसुर भाई को फाँसी हो जाती है। इस न्याय व्यवस्था में सच क्या और झूठ क्या देखने से पहले ही झूठे गवाहपर विश्वास कर एक बेगुनाह को सजा दी जाती है। यहाँ दोषपूर्ण न्याय व्यवस्था का चित्रण मिलता है।

'जुर्म आयद' इस नाटक में उम्मेदी पर अपनी बच्ची की हत्या और आत्महत्या के लिए 307 और 309 जुर्म लगाया जाता है। पुलिसथाने में भी उस पर अत्याचार होते है, लेकिन लगातार 8 साल अन्याय सहनेपर भी उम्मेदी को न्याय नहीं मिलता। आखिर में उम्मेदी खुदखुशी कर लेती है। उम्मेदी की तरफ से बचाव वकील कहते है,'क्या यह कानून अंधा धृतराष्ट्र है जो अपनी बलशाली बाहों के घेरे में आनेवाली हर जानदार और बेजान चीज को चुर-चुर कर देने में ही सुख पाता है? अगर ऐसा है तो वह न कानून है, न न्याय। मात्र ताकत है। पाश्विक ताकत।''[44] यह वाक्य कानून और न्याय पर व्यंग्य करता है।

---

43. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा',पृ.89

44. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद',पृ.35

4.5.4 पुलिस की समस्या -

पुलिस व्यवस्था यह समाज की सुरक्षा के लिए होती है। इन्सानों की रक्षा और उनको सहारा देना देश की सुरक्षा करना गुन्हा करने से रोकना गुन्हेगार को सजा देना, आमन की स्थापना करना आदि कार्य पुलिस व्यवस्था के होते है। लेकिन आज ये सभी कानून और कर्तव्य कोई नहीं मानते। अपने स्वार्थ और इच्छा के नुसार मनमानी करने की भावना ने समाज के रक्षक ही भक्षक बनकर असहाय नारी पर अत्याचार करते है। बेसहारा लोगों पर अन्याय करते है। इस कारण पुलिस व्यवस्था भी एक समस्या बन गयी है।

गिरिराज के 'जुर्म आयद' नाटक में जब उम्मेदी को पुलिस थाने लाया जाता है, तब दरोगा और चीफ उसे बुरी नजर से देखते है। दरोगा कहता है, ''घबराती क्यों है, बच गयी है तो मुल्क के काम आ जायेगी। मुल्क में तेरे जैसी चुस्त और जवान औरतों की कमी है। है ना?''[48] यहाँ दरोगा बच्ची की मौत के कारण दुःखी उम्मेदी से गंदी बाते करता है। चीफ कहता है 'इसमें हमारा भी हिस्सा है। बयान लेने के बहाने उसे छूते है। उसे लिपटने की कोशिश करते है। आठ साल उम्मेदी पर जेल में बलात्कार करते रहते है। उम्मेदी को एक मौत से बचने के बाद हर रोज एक दूसरी मौत से मरना पडता है। बचाव वकील उम्मेदी के पक्ष में बात करते समय पुलिस व्यवस्था के बारे में कहते है,''गुनाहों की इस जलती आग में उन्होंने भी हाथ सेंके है जो उसे बुझाने के लिए तैनात किये गये थे। पानी के दरिया से निकालकर हवस के दरिया में डाल दिया गया। कानून की पवित्रता की रक्षा करनेवालों ने इसकी अस्मत लूटी। कानून के शिकंजे में आने के बाद उम्मेदी ज्यादा असुरक्षित हो गयी।''[46]

वकील बचाव का यह मत उम्मेदी पर हुए अत्याचार को स्पष्ट कर देता है। पुलिस के इस बर्ताव से सामान्य लोगों का पुलिस पर से भरोसा कम होता जा रहा है। इस कारण पुलिस का अन्याय और अत्याचार का ही प्रतीक माना गया

---

45. गिरिराज किशोर - 'जुर्म आयद',पृ.13

46. वही, पृ.20

है। रक्षक पुलिस भक्षक बनेगी तो न्याय कौन करेगा? वही आज अहम सवाल है।

4.6 आर्थिक समस्या -

आज के युग में 'अर्थ' का विशेष महत्व है। कार्ल मार्क्स के अनुसार, ''अर्थ ही जीवन का अविधायक तत्त्व है। युग का राजनैतिक और सामाजिक घटना-क्रम तात्कालिक आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित रहता है। और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास आर्थिक वर्गों के संघर्ष के आधार पर होते है।''[47] इस युग में अर्थ को सहज ही सर्वोपरि स्थान प्राप्त हो गया है। इसके फलस्वरूप हमारी अर्थव्यवस्था ने हमें भयंकर आर्थिक विषमता के कगार पर खड़ा कर दिया है।

''अर्थ समाज की शिराओं में बहनेवाला वह रक्त है। जिसके द्‌वारा समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना स्वस्थ रही है।''[48] किसी भी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्णय आज उसकी आर्थिक स्थिति से निश्चित किया जाता है। इस तरह 'अर्थ' व्यक्ति और समाज के विकास का मेरुदण्ड बन गया है।

'घास और घोड़ा' इस नाटक में पंडित ख्यालिराम के बेटे द्‌वारका का रिश्ता तय करने के लिए पाठशाला के अध्यक्ष पंडित हजारीलाल ख्यालिराम के घर आनेवाले है। पंडिताइन को जब इस बात का पता चलता है तो वह घर की हालत देखकर कहती है,''इतने भारी मानस कुटिया पर पधारे और यहाँ भंग के गिलास के सिवाय कुछ हो ही नहीं। खड़े क्या हो, अपने उन कुँवरजी को बुलाओं। बगलवालों के यहाँ से कुर्सी-मेज मंगवा लो। मैं बड़ी मिसराइन के घर गिरो-गांठ का इन्तजाम करके आती हूँ....।''[49] यहाँ पंडित ख्यालिराम के घर की हालत उनके आर्थिक अभाव को स्पष्ट करती है।

---

47. दुबे विजयकुमार - 'साठोत्तरी हिंदी नाटक',पृ.52-53
48. डॉ.ओमप्रकाश सारस्वत - 'बदलते मुल्य और आधुनिक हिंदी नाटक', पृ.190
49. गिरिराज किशोर - 'घास और घोडा',पृ.29

4.7 धार्मिक समस्या -

समाज में धर्म का अनन्य साधारण महत्व है। लोगों में धार्मिकता बहुत मात्रा में दिखाई देती है। लेकिन आज के आधुनिक युग में पढे-लिखे लोग भी धार्मिक है ऐसा दिखाई देता है। अगने किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए पूजा करते है। खुद से ज्यादा भगवान पर विश्वास करते है। यह एक ऐसी समस्या है जो मानवी मन की भावना या श्रद्धा के कारण किसी भी आसान या मुश्किल समस्या को हल करते समय इन्सान विचारों से ज्यादा भाव से काम लेकर भगवान के सहारे की अपेक्षा रखता है।

'घास और घोड़ा' इस नाटक में भी एक उच्चपदस्त जज के मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास को चित्रित किया गया है। किसी भी मुकदमें का फैसला लेने से पहले जज साहब ईश्वर की पूजा करते है। जब टाईपबाबू जज के घर आते है तो उनकी पत्नी टाईपबाबू से कहती है, "आप बैठ जाइए टाईपबाबू आपको तो मालूम है, जज साहब हमेशा कोई जरूरी फैसला लिखवाने से पहले पूजा किया करते है। वे ईश्वर से डरनेवाले इन्सान है... किसीपर अन्याय नहीं करना चाहते..... ! किसी की बात नहीं सुनते, सिर्फ आत्मा की बात सुनते है।"[50] यहाँ हायकोर्ट का जज होकर भी ईश्वरवादी है यही स्पष्ट होता है। उन्हें कानून और खुद से ज्यादा भगवान पर विश्वास है। खुद से ज्यादा भगवान पर भरोसा करते है। इसी कारण यह भी समस्या ही है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि, गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं को उजागर किया है। वस्तुतः वर्तमान युग समस्या का युग है। मनुष्य के जीवन में समस्याएँ निरंतर बढती जा रही है। समस्या सारे विश्व में व्याप्त है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ पर समस्या न हो। समस्या एक उलझन, पहेली, विकट प्रसंग है। मनुष्य के जीवन में

---

50. गिरिराज किशोर - 'घास और घोड़ा',पृ.20

अनेक समस्याएँ होती है। दो विरुद्ध स्थितियों में समस्या का निर्माण होता है। समस्या निर्माण द्वारा अपने जीवन को दुःखपूर्ण बनाने का दायित्व मनुष्य का ही है। एक समस्या से अनेक समस्याएँ उत्पन्नहोती है।

प्राकृतिक संकट में उत्पन्न समस्याओं के अतिरिक्त लगभग सभी समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ होती है। क्योंकि वे समाज द्वारा निर्मित होती हैं, और उनका प्रभाव समाज पर ही पडता है। केवल समस्या निर्मिति के मंच अलग-अलग है जैसे - धर्म, अर्थ. राजनीति, शिक्षा, प्रशासन आदि। विचारों में परिवर्तन आने के कारण पारिवारिक विघटन की स्थिति निर्माण हो गयी है। गिरिराज किशोर ने तारा, विमला, द्रौपदी, उम्मेदी के पारिवारिक समस्या को स्पष्ट करते हुए परिवार विघटन का चित्रण किया है। जो आज के समाज की यथार्थ स्थिति को स्पष्ट करते है।

दांपत्य जीवन में अनेक समस्याओं का सामना नारी को करना पड़ता है। द्रौपदी के पाँच पति होकर भी उसकी रक्षा करने कोई नहीं आता। आशा, उम्मेदी पर तो उनके पति ही अत्याचार करते है, ऐसे बहुत से कारण है जिससे दांपत्य जीवन टूटकर एक समस्या बन जाता है। नारी किसी भी क्षेत्र में समस्या से मुक्त नहीं है। उसका शारीरिक एवं मानसिक शोषण किया जाता है। उसे भोगवस्तु समझकर कठपुतली के समान पुरुष अपनी इच्छा के नुसार नचाते है। कौरव-पांडवों के जुए के खेल में द्रौपदी को दांव पर लगाया जाता है। नारी की मजबुरी और असहायता का फायदा उठाकर उस पर अन्याय अत्याचार किए जाते है। आज के आधुनिक युग में नारी की इतनी तरक्की के बावजूद भी उसका शोषण किया जाता है।

पति प्रेम से असंतुष्ट नारी जब अपनी इच्छापूर्ति के लिए गैर मर्द से संबंध रखती है तो अवैध यौन संबंध की समस्या निर्माण होती है। प्रेम भी आज के युग में एक समस्या है। प्रेम जैसी कोमल भावना में कई बार नारी को असफलता का सामना करना पडता है। नारी अपने जीवन में प्रेम तो करती है पर उसमें अनेक बाधाएँ आ जाने से सफल नहीं होती। 'नरमेध' की तारा, वंती, नीरा के जीवन में

यही दर्शाया है। आत्महत्या की समस्या बढती ही जा रही है। नारी अत्याचार सहन न होने पर, शोषण से त्रस्त होने पर आत्महत्या का रास्ता अपनाती है। आम आदमी का शोषण आज के जमाने में बढता ही जा रहा है। इसकी तरफ भी लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है। सत्ता कि चाह इंसान में इंसानियत खत्म कर देनेवाली चाह है। सत्ता के लिए एक दूसरे का खून करके, युद्ध करके सत्ता प्राप्त की जाती है यह एक स्वार्थ प्रवृत्ति है। जो आजकल बढती ही जा रही है।

भ्रष्टाचार इस देश को लगी एक बिमारी है, जिसका कोई इलाज नहीं है। यह बिमारी देशभर फैल चुकी है। हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार होता है ये 'घास और घोड़ा', 'जुर्म आयद' में दिखाया गया है। झूठे गवाहों और प्रमाणों के कारण सच्चा न्याय मिलना मुस्किल हो गथा है इस बात को स्पष्ट करते हुए आज की न्याय व्यवस्था पर करारी चोट की गई है। पुलिस व्यवस्था की रक्षक के बजाय भक्षक प्रवृति को 'जुर्म आयद' में चित्रित किया गया है। जो लोगों की मजबुरी और असहायता का फायदा उठाते है। धार्मिकता मन की भावना है। यह ईश्वर के प्रति श्रद्धा है। पर जब कार्यपूति, या इच्छापूर्ति के लिए अपने कार्य, विचार, निर्णय से ज्यादा भगवान के भरोसे रहे तो यह एक समस्या बन जाती है। पढे-लिखे लोग भी इसमें श्रद्धालू दिखाई देते है। अर्थ इंसान की जरूरत है। अर्थ के कारण वर्गव्यवस्था स्थापित हो गयी है। आर्थिक स्थिति इंसान को लाचार बना देती है। इस समस्या से निम्नवर्ग, मध्यवर्ग ज्यादा परिचित है।

गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में इस तरह के विविध समस्याओं का चित्रण कर वर्तमान समाज को, उसके समकालिन स्थिति को उजागर किया है। साथ ही समाज में जाग्रति लाने का कार्य किया है।

****